सुधा अरोड़ा की कहानियों में स्त्री ज़िम्मेदार पात्र के रूप में दर्शाया गया है। उनकी कहानियों शारीरिक या मानसिक दोनों ही रूपों में स्त्रियों को सताया जाता । उनका कहानी संग्रह 'बुत जब बोलते हैं' की कहानी देह विमर्श की तीखी आवाजों के बीच स्त्री जीवन के किसी मार्मिक हिस्से को अभिव्यक्त करती दिखाई देती है। प्रस्तुत कहानी में लेखिका स्त्री की दरदिया बनकर साथ देती है तो दूसरी ओर उन्हें मजबूत बनाती भी है। आधुनिक स्त्री के अधिकार और उसकी स्वतंत्रता के बारे में आज की महिला लेखकों ने जो विचार प्रकट की है वह सराहनीय है। उच्च शिक्षा ग्रहण कर आत्मनिर्भर बनने से क्या वह पूर्णतया स्वतंत्र हुई है? स्त्री को शैक्षिक स्वतंत्रता के साथ मानसिक एवं दैहिक स्वतंत्रता की भी आवश्यकता है। निम्नमध्यवर्गीय स्त्रियां विद्रोह तो करती है लेकिन पारंपरिक बंधनों से मुक्त नहीं हो पाती है। परंपरागत मूल्यों को नकारना संबंधों पर दरार आने का समान है। सुधा अरोड़ा जी के अनुसार हर स्त्री का जीवन एक प्रयोगशाला है।

उर्मिला शिरीष की कहानी 'लकीर' में असमानता का भाव स्वयं माता पिता पैदा करते हैं। बेटे को हिस्सा देकर बेटी को घर से निकालता है। कहानी में उस लड़की के संघर्ष एवं स्वत्रंता की लड़ाई की कहानी है। 'उसका अपना रास्ता' कहानी स्त्री की आत्मचेतना की अपने आप से मुक्त होने की कहानी है। नारी को विषम परिस्थितियों में जीवन समाप्त न करके जीवन जीने की कोशिश करने के लिए प्रेरित करती कहानियां हैं।

निष्कर्ष:-

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि उर्मिला शिरीष, सुधा अरोड़ा, प्रज्ञा, गीताश्री और वंदना राग जैसी लेखिकाओं ने नारी की स्वतंत्रता का विविध पक्षों को बड़ी गंभीरता के साथ कहानियों में दर्शाया गया है। नारी आज भी पूर्णतया मुक्त नहीं हुई है। स्त्री और समाज के संबंधों के समीकरण इन लेखिकाओं की कहानियों के ज़रिए सामने आ रहा है । महिला कहानीकार मज़बूत और आत्मनिर्भर होने के लिए प्रेरणा देता है। महिला लेखकों की कहानियों में नारी पराधीनता को नहीं स्वाधीनता को चुनती है।

****

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हिंदी कहानी दो दशक – डॉ.सुरेश धींगडा – पृष्ठ संख्या 32,अभिनव प्रकाशन,दिल्ली 1976
2. रज्जो मिस्त्री – प्रज्ञा - पृष्ठ संख्या 21,शिवना प्रकाशन, सीहोर,मध्यप्रदेश 2021
3. तक़सीम (भूमिका) - प्रज्ञा - पृष्ठ संख्या 10,साहित्य भंडार, इलाहाबाद
4. बलम कलकत्ता - गीताश्री - पृष्ठ संख्या 31,प्रलेक प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,महाराष्ट्र, मुम्बई

अभिमन्यु अनत और अमिताभ घोष के चुने हुए उपन्यासों में हाशिएकृत लोगों की आवाज़ें:सबाल्टर्न अध्ययन के आधार पर

अरुंधती मोहन
शोधार्थी
हिंदी विभाग,
केरल,विश्वविद्यालय
तिरुवनंतपुरम,केरल

डॉ.आर.जयचंद्रन
आचार्य
हिंदी विभाग
केरल विश्वविद्यालय
तिरुवनंतपुरम,केरल

सारांश : साहित्य में हाशिए कृत लोगों की छोटी आवाज़ों को स्थान किस प्रकार और कैसे मिला है ?इस प्रश्न का उत्तर हम इतिहास से ले जा सकते हैं।जब तक इतिहासकारों ने इतिहास की व्याख्या अपने ढंग से की है,इसके पीछे उपनिवेश और सत्ता की पाबंदी ज़रूर होती है।एक ज़माने में इतिहास केवल राजा,नेता और उनके पल्ले पकड़नेवालों की हथौली में था।लेकिन सदियों की रफ़्तार में जनता को मालूम हुआ कि इतिहास के अनदेखे,अनछुए विचारों को लिपिबद्ध करना है।इतिहास तब से हाशिए कृतों की ज़िन्दगी और उनकी पहचान को खोजने लगा।हिंदी के नामी प्रवासी उपन्यासकार अभिमन्यु अनत ने अपने उपन्यासों के माध्यम से हाशिए पर खड़े हुए लोगों की यंत्रणा को अभिव्यक्त किया है।उपन्यास के हरेक पात्र अपने अधिकार केलिए लड़ते हैं।उसीप्रकार इंडियन इंगलिश साहित्य में अमिताभ घोष का नाम बेजोड़ है।उन्होंने एंथ्रोपोलॉजी के सहारे सबाल्टर्न अध्ययन पर ज़ोर देकर वर्ग,वर्ण,लिंग पर हुए भेदभावों को उपन्यासों का विषय बनाया।

बीजशब्द:हाशिएकृत,उपनिवेश,वर्ग,संघर्ष,वर्णभेद,साम्राज्यवाद ,सामंतवाद,दलित

अभिमन्यु अनत के उपन्यास 'लाल पसीना' में उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद से लड़नेवाले हाशिएकृत लोगों की ज़िदगी का वर्णन है।समाज की संरचना के अन्तर 'dominant' और 'subordinate' जैसे दो तड़के के लोग बसते हैं।power जिसके हाथ में है,उसी के अनुसार समाज की गतिशीलता है।सबसे पहले अंतोनियो ग्राम्शी ने hegemony,power जैसे सार युक्त शब्दों की व्याख्या की है।उनके अनुसार राजनीतिक,सामाजिक,आर्थिक और सांस्कृतिक तौर पर एक प्रत्येक समूह की आवाज़ें ही मुखरित है। बाकि लोग अपने को खुद निचले मानकर सिकुड़कर जी रहे हैं। अभिमन्यु अनत जी के उपन्यास 'लाल पसीना' में ब्रिटिश उपनिवेश यदि 'dominant' है तो, मज़दूर 'subordinate' है। उन्हें हम सबाल्टर्न कह सकते हैं। एक ज़माने में इंग्लैंड और ब्रिटेन में servant और peasant को सबाल्टर्न कहलाते थे।उपन्यास में तीन मज़दूर नायक हैं-कुंदन,किसन,मदन।उपन्यास के केंद्र पात्र कुंदन गोरे अफसरों और ज़मींदारों की क्रूरता का शिकार बन जाता है।सालों से वह कारावास में बंदी है।एक दिन ईख के खेत में काम करते समय उसके पैर बुरी तरह से घायल हुए।उसे जेल

के अस्पताल में दाखिला दिया।लेकिन अधिकारी वर्ग इसप्रकार कारावास में पड़े हुए लोगों को सही ढ़ंग से परवरिश न करते थे।उन्हें उचित दवा,खाना सब न देते थे।कुत्तों की तरह उनसे व्यवहार करते थे।मॉरिशस में रहने वाले भारतीय मजदूरों को उस समय अपनी कोटि के सीमित स्थल से बाहर जाने की अनुमति नहीं थी।अपनी मातृभाषा बोलने का अधिकार नहीं था।वहाँ के कैदी जीवन का वर्णन अभिमन्यु जी करते हैं- "कैदियों के पांव और हाथ में ज़ंजीर थी।इस पर भी किसी को कमर सीधी करने की इजाजत नहीं थी"[1]।उपन्यास के एक और मुख्य पात्र किसन मजदूरों की यातनापूर्ण ज़िन्दगी से उनकी मुक्ति केलिए प्रयत्न करते हैं।वह अपने पिता से पूछता है-"आखिर हम दास क्यों?"[2]। उस ज़माने दुनिया भर में दास व्यापार खुले तौर पर कायम था।जब ब्रिटिश राज काज की स्थापना हुई,तब ब्रिटिश अफसरों ने दास व्यापार के प्रतिरोध में नियम लागू किया।लेकिन उन अधिकारीयों ने अपने उपनिवेश की समृदधि की कोशिशों से आसपास के देशों से मज़दूर लाये गए।एक कागज़ के आधार पर 'गिरमिट'।उस प्रकार 'गिरमिट' दस्तावेज़ में नाम अंकित करते हुए अधिकांश भारतीयों ने गिरमिटिया बनकर मॉरिशस आ बसे।लेकिन यह तो पूंजीपतियों का षडयंत्र था।लाल पसीना उपन्यास में किसन पूंजीपतियों पर आक्रोश करते हैं।उनका मानना था "अगर शुरू से ही प्रश्न किया गया तो स्थिति यह नहीं रहती।"[3]

उपनिवेश में नारी की स्थिति भी भयावह थी।केवल एक उपभोग वस्तु मात्र सोचकर उन स्त्रीयों को साहबों की कोटि पर ले जाते थे।उपन्यास के एक सन्दर्भ में कुंदन अपने आँखों से सात नारियों को घसीटे देखा था।कुंदन के प्रयत्न से बस्ती की रेखा नामक स्त्री के मान सम्मान की रक्षा होती है।लाल पसीना उपन्यास में मज़दूर संघटित होकर अपने अधिकार केलिए लड़ते हैं।कुंदन के बाद किसन और किसन के बाद मदन हक़ की लड़ाई के नायक बन जाते हैं।इसप्रकार वर्ग संघर्ष की नीव डालते हैं।

अभिमन्यु अनत के एक और उपन्यास 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' इसी वर्ग संघर्ष से जुड़ा हुआ है।समाज में एक मध्य वर्ग के परिवार में आर्थिक समस्या कैसी उत्पन्न होती है?इसका उत्तर हम नायिका नेहा की ज़िन्दगी से निकाल सकते हैं। 'मुड़िया पहाड़ बोल उठा' उपन्यास की नायिका नेहा जों फ्रांस की फैक्ट्री में काम करने केलिए जा रही है।उस फैक्ट्री में जाना उनके माँ और पिता को पसंद नहीं है।लेकिन परिवार की आर्थिक समस्या की वजह से वह काम पर जाती है ।मॉरिशस में उन दिनों में गरीबी बढ़ रही थी।औपनिवेशिक कल में महंगाई भी बढ़ रही थी। एक बार नेहा अपनी प्रेमी उमेश से कहती है-"उमेश मैं इस नौकरी को शौक से नहीं।बल्कि मजबूरी और ज़िन्दगी के तकाजे के कारण करना चाहती हूँ"[4]।इस प्रसंग से नेहा की विवशता द्रष्टव्य है।

मुड़िया पहाड़ बोल उठा उपन्यास में अनत ने राजनीति में जाति की आवश्यकता पर लिखा है।"मैंने तुम्हें कहा था कि तुम चमार और दुसाद इस तरह के शब्द मत बोला करो।"[5] मुड़िया पहाड़ बोल उठा उपन्यास में नायक उमेश इस प्रकार कहते हैं।तब अरुण कहते हैं-राजनीति में इसप्रकार धर्मात्मा बनकर नहीं रह सकता।केवल जनता के सामने नेता चिल्ला चिल्लाकर बताते हैं कि हमारे इलाके में जात पांत नहीं होना चाहिए।हम सब एक हैं।लेकिन चुनाव में जीत होने केलिए हरेक जाति सभा में नेता जाया करता है।जब उमेश और अरुण वोट मांगने केलिए राजपूत सभा में गए,तब अमीचंद भगत जो राजपूत सभा के एक प्रतिनिधि है,जिन्होंने कहा कि "मैं अपने लिए कुछ भी नहीं चाहता ।हमारी सभा के ये दो इनकेलिए आपको कुछ करना होगा।उमेश से वे मांगते हैं कि उनके बड़े बेटे को रेडियो टेलीविजन वाली तरक़्क़ी मिलकर रहेगी तो अच्छा होगा।"[6] इसप्रकार समाज में जाति के नाम पर पॉलिटिक्स चल रही है।उपन्यास में राजनीति के यथार्थ की व्याख्यान है।राजनीति भी उद्योगपतियों और पूंजीपतियों के हाथ में हैं।जब किसी एक देश में चुनाव की संभावना है,तब पूँजी की ज़रुरत हैं।चुनाव के उम्मीदवार जनता के बीच अपनी पार्टी के प्रचार प्रसार केलिए रकम इकट्ठा करते हैं।पूँजी की बौछार केलिए नेता पूंजीपतियों के सहयोग केलिए विनम्र खड़े हैं।अनत जी इसप्रकार पैसे की मांग पर ज़िक्र करते हैं।पार्टी सभा के प्रधान ने सभा के सम्मुख कहा था -"इस चुनाव केलिए हमें देश के चन्द ईमानदार उद्योगपतियों और उदारधनियों का सहयोग भी मिल रहा है,जिससे हमारे निजी सहयोग का बोझ कम हो जायेगा।"[7]

Indian english writer cum anthropologist अमिताभ घोष का प्रौढ़तम उपन्यास 'अफीम सागर' में ब्रिटिश उपनिवेश से जुड़ी हुई तमाम समस्याओं और उनसे निकली प्रतिक्रियाओं का वर्णन है।औपनिवेशीकरण के कई चेहरे हैं और उनमें से कुछ उपन्यास में बेनकाब हैं।जिन अंग्रेजों ने भारत को अपने अधीन कर लिया था,वे किसानों को आम प्रथा के खिलाफ अफीम उगाने के लिए मजबूर करते हैं।यह अफीम की खेती से जुड़े लोगों के जीवन को बहुत प्रभावित करता है क्योंकि वे अपनी भूमि के अधिकारों से वंचित हैं और कई लोग नशे के आदी हो जाते हैं और अपने जीवन को स्वप्न जैसी (नशीली दवाओं से प्रेरित) अवस्था में घसीटते हैं।उपन्यास कलकत्ता की ईस्ट इंडिया कंपनी से जुड़े होकर इंडो चीन ओपियम व्यापार तक पाठकों को ले जाते हैं।उपन्यास को पूरी तरह विश्लेषित करने से हम महसूस कर सकते हैं कि इसकी मुख्यधारा में उपन्यासकार हाशिएकृतों की small voices को मुखरित करते हैं।उपन्यास दीती नामक एक राजपूत वंश की नारी से शुरू होती है।वो गाजीपुर ओपियम फैक्ट्री में काम करने वाले अपने पति हुकुम सिंह और अपनी बेटी कबूतरी के साथ रहती है।दीती की ज़िंदगी में अफीम की भूमिका महत्वपूर्ण है।जब अँग्रेज़ अफसर बुन्हैम आइबिस नामक कश्ती से होकर अफीम निर्यात का कारोबार करने लगे और उसी कश्ती के माध्यम से मॉरिशस की और कुली लाने लगे,तब दीती भी कश्ती से मॉरिशस आती है।दीती को पति के परिवारवालों से पीड़ाएँ झेलनी पड़ी।पति हुकुमसिंह की मृत्यु के बाद वे लोग दीती को सती प्रथा स्वीकार करने केलिए विवश कराते हैं।लेकिन कलुआ नामक चर्मकार जाति की आदमी उसकी रक्षा करता है।उन दोनों की ज़िन्दगी आइबिस कश्ती

से होकर शुरू होती है ।अफीम सागर में कलुआ निम्नजाति के लोगों का प्रतिनिधि बनकर आता है।भारत में 'दलित' शब्द सबसे पहले महात्मा ज्योतिराव फुले ने 'untouchables' केलिए प्रयोग में लाया ।दलित शब्द की व्याख्या करते हुए एम् एन वानखेड़े ने कहा कि "the term dalit includes not only the bauddhas or backward classes but all the suppressed and working classes".[8]अफीम सागर उपन्यास में केवल भारत की जाति भेद मात्र नहीं ब्लैक,वाइट,रेड टैग से होने वाले अत्याचारों का खुलंत चित्रण है।इस पर बाबुराव बागुल नामक आलोचक कहते हैं"our definition of dalit includes blacks,whites,and reds of america and afro asian countries .it also includes untouchables,tribals,and other exploited people of our country."[9] अफीम सागर उपन्यास में ज़ेकरी रीड नामक पात्र ब्लैक की दर्ज़े में आता है।अमेरिका में पले बड़े ज़करी रीड अपने वर्ण के नाम पर पिछड़े होने का अनुभव करता है,इसीलिए वह आइबिस कश्ती के फिटिंग के काम केलिए भारत आता है।अपनी स्वामी साम्राज्यवादी बेंजमिन बुन्हैम से वह एक प्रसंग में कहता है "अगर गुलामी आज़ादी है तो मुझे खुशी है कि मैं उनसे आजीविका नहीं कमा रहा हूँ।चाबुक और जंजीरें मुझे पसंद नहीं हैं।"[10] इस बात से उनकी प्रतिरोधी भावना व्यक्त है।उपन्यास में जोडू नामक पात्र भी निम्न होने की वजह से अधिकारियों के अधीन होकर आइबिस में काम करता है।एक मेहतर के रूप में,उसे मूतदान माँजने,शौचालय साफ करने,बर्तन धोने,डैक झाड़ने जैसे काम करने होंगे।जोडू को लस्कर और अफ्सर गालियाँ देकर पुकारते हैं।

अमिताभ जी के उपन्यास 'बन्दूक द्वीप' में दलित की स्थिति का वर्णन है।सुंदरबन द्वीप में रहनेवाले एक दलित स्त्री है मोयना।मोयना को अपने बेटे टीपू की पढाई और भविष्य केलिए उत्सुकता थी।लेकिन उसके पति की मौत होने से आर्थिक स्थिति ख़राब हो गयी।लेकिन वैज्ञानिक पिया रॉय ने टीपू की पढ़ाई का इंतज़ाम करने लगी।टीपू को अपना जन्म स्थान लूसिबाड़ी में स्कूल जाना असंभव था।इसीलिए पिया ने उसे कोलकत्ता में एक बोर्डिंग स्कूल में दाखिला दिया।लेकिन दौर्भाग्यवश कक्षा की अमेरिकी सहपाठियों को मालूम हुआ कि टीपू एक दलित है।सहपाटीयों ने उसे तंग करते थे और एक दिन एक प्रभावशाली परिवार के बच्चे के साथ झगडा कर ली और टीपू को स्कूल से निकाल दिया।इसप्रकार दलित बच्चों को शिक्षा से वंचित कराते हैं।भारत जैसे विकासशील देशों में ही नहीं,विकसित देशों में भी जाति के नाम पर अत्याचार हो रहे हैं।

संक्षेप में कह सकते हैं कि अभिमन्यु अनत के उपन्यास लाल पसीना,मुड़िया पहाड़ बोल उठा और अमिताभ घोष के अफीम सागर,बन्दूक द्वीप उपन्यासों में सबाल्टर्न लोक नायक हैं।इतिहास केवल पवर power की लेखा जोखा नहीं है। किसी एक समाज और देश के निर्माण में सबाल्टर्न लोगों की पसीना ही बहता है।उन पर ही इतिहास का आधार है।दोनों उपन्यासकारों ने मज़दूर,किसान,स्त्री,दलित और लोक जनता को अपने उपन्यासों का केंद्र बनाया है।

****

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1.लाल पसीना,अभिमन्यु अनत,पृ सं 35
2.वही,पृ सं 39
3.वही,पृ सं 40
4.मुड़िया पहाड़ बोल उठा,अभिमन्यु अनत,पृ सं 9
5.वही,पृ सं 55
6.वही,पृ सं 27
7.वही,पृ सं 25
8.Aesthetics of subaltern literature,Dr.Shivaji,DrSargar Shubham Publications,Kanpur,2018,page no.27
9.वही,पृ सं,28
10.अफीम सागर,अमिताभ घोष,पृ सं 66

सूरीनाम की कविताओं में यथार्थवाद

ब्लेस्सनराज्
शोधार्थी हिंदी विभाग
विश्वविद्यालय
तिरुवनंतपुरम,केरल

डॉ.जयचंद्रन.आर
आचार्य हिंदी विभाग,
केरल विश्वविद्यालय
तिरुवनंतपुरम,केरल

सूरीनाम भारत के लिए अपरिचित देश नहीं है। सूरीनाम में आज भी भारतीय बसते हैं। गिरमिटिया मजदूरी के तहत गए भारतीयों की तीसरी या चौथी पीढ़ी वहाँ रहते है। उन भारतीयों की कोशिश से सूरीनाम में सरनामी साहित्य और संस्कृति पनप रही है। सूरीनाम में बसे भारतीयों के साथ उनकी संवादिक और सांस्कृतिक आवाज को सरनामी साहित्य के माध्यम से प्रकट किया गया है। यहाँ तक कि उनकी क्रियोली हिंदी को 'सरनामी' नाम दिया गया है, और यह भाषा सूरीनाम की एक महत्वपूर्ण भाषा है। प्रख्यात हिंदी लेखिका पुष्पिता अवस्थी जी के शब्दों में :- "यह भोजपुरी बोली से इतर अवधी की भी गोतिया भाषा है। यह हिंदी भाषा का एक स्वरूप है सत्तर प्रतिशत अवधी, बीस प्रतिशत भोजपुरी और दस प्रतिशत मगही से विकसित यह अपनी तरह की अनोखी भाषा है। इसका नवीनीकृत रूप सरनामी नाम से जाना जाता है। इसका साहित्य और व्याकरण हाल में विकसित हुआ है। यह समृद्ध सरनामी भारतवंशियों की सांस्कृतिक भाषा है।"[१]

सरनामी और खड़ीबोली में सूरीनाम के कवि साहित्य सृजन करते आ रहे हैं। मुख्यत: सूरीनाम की कविताएँ सरनामी हिंदी एवं सूरीनाम की संस्कृति के संवाहक है। इसके माध्यम से अपने पारंपरिक धर्म और संस्कृति को बनाए रखने में मदद कर रहे हैं। "इनकी कविताओं में संस्कृति और उससे जुड़ाव की झलक है, भाषा प्रेम की अभिव्यक्ति है, हिंदी सीखने के लिए प्रेरणा है। इनमें समस्त जीवन की अनुभूतियों के बहुआयामी चित्र हैं और अतीत की वेदना है और साथ में है धार्मिक आस्था, भक्ति और लोक-जीवन का संगीत।"२

सारांश : एक साहित्यिक रचना का दायित्व सिर्फ मनोरंजन नहीं है, सामजिक यथार्थ का अंकन भी है। सरनामी कविताओं में सूरीनाम के सामान्य भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की जीवन विषमताओं, कटुताओं, विसंगतियां एवं विडंबनाओं का चित्रण किया है। उनकी कविताएँ यथार्थबोध से यानी यथार्थवादी विचारधारा से निकट है। अरस्तु के काल से लेकर समकालीन साहित्य तक का साहित्य यथार्थवादी प्रभाव से मुक्त नहीं है। प्रेमचंद के अनुसार "यथार्थवाद में हमारी दुर्बलताओं, हमारी विशेषताओं और हमारी क्रूरताओं का नग्न चित्रण है और इस तरह यथार्थवाद हमको निराशावादी बना देता है, मानव चरित्र पर से हमारा विश्वास उठ जाता है। हमको चारों ओर बुराई ही बुराई नजर आने लगती है। यह सही है कि संसार में व्याप्त बुराईयों का चित्रण भी यथार्थवाद में होता है, परन्तु जीवन की अन्य वास्तविकताओं का भी वर्णन